

---

## इकाई 19 धर्म: दर्खाइम और वेबर

---

### इकाई की रूपरेखा

- 19.0 उद्देश्य
- 19.1 प्रस्तावना
- 19.2 धर्म के समाजशास्त्र में एमिल दर्खाइम का योगदान
  - 19.2.1 धर्म की व्याख्या - मान्यताएँ और अनुष्ठान
  - 19.2.2 टोटमवाद का अध्ययन
  - 19.2.3 धर्म और विज्ञान
- 19.3 मैक्स वेबर का योगदान
  - 19.3.1 भारतीय धर्म
  - 19.3.2 चीनी धर्म
  - 19.3.3 प्राचीन यहूदी धर्म
- 19.4 दर्खाइम और वेबर: तुलना
  - 19.4.1 विश्लेषण की इकाइयाँ
  - 19.4.2 धर्म की भूमिका
  - 19.4.3 देवता, भूत-प्रेत और पैगम्बर
  - 19.4.4 धर्म और विज्ञान
- 19.5 सारांश
- 19.6 शब्दावली
- 19.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें
- 19.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

---

### 19.0 उद्देश्य

---

इस इकाई को पढ़ने के बाद आपके लिए संभव होगा

- धर्म से संबंधित एमिल दर्खाइम के विचारों का विवेचन करना
- धर्म के समाजशास्त्र में मैक्स वेबर के योगदान पर चर्चा करना
- इन दोनों चिंतकों के दृष्टिकोण में अंतर बताना।

---

### 19.1 प्रस्तावना

---

जैसा कि आपको मालूम है, धर्म को मानव समाज का अत्यंत महत्वपूर्ण अंग माना जाता है। धर्म का संबंध मनुष्यों की मान्यताओं और अनुष्ठानों की उस प्रणाली से है जो उसके क्रियाकलापों और विचारधाराओं को मार्गदर्शित करती है। धर्म वह माध्यम है जिसके द्वारा लोग एकजुट होते हैं, जिससे उनमें एकता और आत्मीयता की भावना पैदा होती है। कभी-कभी इसका परिणाम बिल्कुल विपरीत होता है जब कोई एक धार्मिक समूह दूसरे समूह के प्रति विरोध प्रकट करने के उद्देश्य से काम करता है। धर्म वह माध्यम है जिसके द्वारा लोग जीवन की समस्याओं और संकटों के समाधान ढूँढते हैं।

धर्म एक सामाजिक सत्य है और समाज की अन्य व्यवस्थाओं से उसका गहरा संबंध है। धर्म, समाजशास्त्रियों और नृशास्त्रियों के लिये हमेशा से रोचक विषय रहा है। इस संबंध में दर्खाइम और वेबर के योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

इस खंड की पहली इकाई में हमने समाजशास्त्र के संस्थापकों की विशिष्ट विचार पद्धतियों का अध्ययन किया। इस इकाई में आइए हम देखें कि किस प्रकार दर्खाइम और वेबर ने अपनी समाजशास्त्रीय पद्धतियों का प्रयोग धर्म के अध्ययन द्वारा किया।

भाग 18.2 में धर्म के समाजशास्त्र में दर्खाइम के योगदान को प्रस्तुत किया जायेगा। उसकी महत्वपूर्ण कृति *द एलिमेंटरी फॉर्म ऑफ रिलीजस लाइफ* (1912) में उसकी प्रमुख संभावनाओं पर चर्चा की जायेगी। भाग 19.3 में धर्म संबंधित वेबर की प्रमुख अवधारणाओं पर विचार किया जायेगा। अंतिम भाग 19.4 में इन चिंतकों के दृष्टिकोण में अंतर पर नज़र डाली जायेगी।

## 19.2 धर्म के समाजशास्त्र में एमिल दर्खाइम का योगदान

*द एलिमेंटरी फॉर्म ऑफ रिलीजस लाइफ* दर्खाइम की महत्वपूर्ण कृति है। इस की प्रमुख स्थापनाओं पर आज भी विद्वानों और विद्यार्थियों के बीच वाद विवाद होते हैं।

इससे पहले कि इस कृति के प्रमुख विचारों पर चर्चा करें, आइए एक महत्वपूर्ण प्रश्न की ओर नज़र डालें। दर्खाइम ने विश्व के विकसित धर्मों के अध्ययन (जैसे कि हिन्दू धर्म, इस्लाम, ईसाई धर्म) की अपेक्षा धर्म के सरलतम रूप पर ही ध्यान क्यों केन्द्रित किया?

आइए, एक उदाहरण द्वारा इस प्रश्न का उत्तर दें।

यदि आपको साइकिल चलाना आता है तो मोटर साइकिल चलाने में आपको ज़्यादा दिक्कत नहीं होगी। इसी तरह यदि आप धर्म के सरल रूप समझें, तो जटिल, सुव्यवस्थित धर्मों को समझने में सहायता मिलेगी। धर्म का सरलतम रूप उन समाजों में पाया जा सकता है जिनकी सामाजिक व्यवस्था उतनी ही सरल हो, यानी आदिम जनजातीय या आदिवासी समाज। दर्खाइम का उद्देश्य “आदिवासी” (aborigines) समाज में आदिवासी धर्म के अध्ययन द्वारा जटिल विचार प्रणालियों और मान्यताओं पर प्रकाश डालना था।

अगले उपभागों में इसी प्रयास का विवेचन किया जायेगा। सबसे पहले आइए देखें कि दर्खाइम किस प्रकार धर्म की व्याख्या करता है।

### 19.2.1 धर्म की व्याख्या - मान्यताएँ और अनुष्ठान

दर्खाइम का कहना है कि धर्म की व्याख्या करने से पहले हमें अपनी पूर्वाकल्पनाओं और पूर्वाग्रहों को दूर करना होगा। वह इस मान्यता को नकारता है कि देवताओं और भूत-प्रेतों जैसी रहस्यमय और अलौकिक बातों मात्र से धर्म संबंधित है। उसके अनुसार धर्म न सिर्फ असाधारण बातों से बल्कि आम जीवन की सामान्य घटनाओं से संबद्ध है। सूर्योदय और सूर्यास्त, ऋतुओं का चक्र, पेड़-पौधों, फसलों का उगना-बढ़ना, नये जीवों का जन्म—सब धार्मिक विचारों के विषय हैं।

धर्मों की व्याख्या करने के लिये विभिन्न धार्मिक प्रणालियों का अध्ययन ज़रूरी है, जिससे उनके समान तत्वों को पहचाना जा सके। दर्खाइम (1912: 38) का कहना है कि “धर्म की परिभाषा उन समान गुणों के संदर्भ में ही की जा सकती है जो हर धर्म में पाये जाते हैं।”

दर्खाइम के अनुसार सभी धर्मों में दो मूल तत्व होते हैं धार्मिक विश्वास और धार्मिक अनुष्ठान। ये विश्वास सामूहिक प्रतिनिधान (collective representations) हैं (जिनका विस्तृत अध्ययन खंड 3 में किया जा चुका है), और धार्मिक अनुष्ठान समाज द्वारा स्थापित वे क्रियाएँ हैं जो इन विश्वासों से प्रभावित होती हैं।

जैसा कि आपने पहले पढ़ा है, धार्मिक विश्वास पवित्र और लौकिक इस विभाजन पर आधारित है। पवित्र और लौकिक क्षेत्र एक दूसरे के विपरीत हैं और इस आपसी भेद को धार्मिक अनुष्ठानों और कर्मकांडों द्वारा नियंत्रित किया जाता है। पवित्र अथवा दिव्य क्षेत्र वह है जिसे उच्च स्तर दिया जाता है और जिसके प्रति सम्मान अथवा भय की भावना पैदा होती है। दिव्य क्षेत्र को लौकिक क्षेत्र से अधिक महत्व और प्रतिष्ठा दी जाती है। उसके अस्तित्व और शक्ति को सामाजिक नियमों द्वारा सुरक्षित किया जाता है। दूसरी और लौकिक क्षेत्र के अंतर्गत आम दैनिक जीवन के सामान्य पहलू शामिल हैं। दर्खाइम के अनुसार दिव्य और लौकिक क्षेत्रों को एक दूसरे से अलग रखना आवश्यक माना जाता है, क्योंकि वे एक दूसरे से मूल रूप से भिन्न, विपरीत और विरोधी हैं।

आइए, इस बात को उदाहरण द्वारा स्पष्ट करें। मंदिर में जूते पहनकर जाना मना क्यों है? जूते या चप्पल आम जीवन में इस्तेमाल किये जाते हैं, अतः वे लौकिक क्षेत्र से संबद्ध हैं। किन्तु मंदिर को दिव्य, शुद्ध स्थल माना जाता है। जूतों की गंदगी से मंदिर को सुरक्षित रखना आवश्यक हो जाता है। इस प्रकार, दिव्य और लौकिक क्षेत्रों को अलग रखा जाता है।

दर्खाइम के अनुसार धार्मिक विश्वास और अनुष्ठानों का एकीकरण धर्म का स्वरूप लेता है। विश्वास से उसका तात्पर्य है विभिन्न नियम, नैतिक विचार, शिक्षा और मिथक। ये सब वे सामूहिक प्रतिनिधान हैं जो व्यक्ति के बाहर होते हुए भी उसे धार्मिक व्यवस्था से एकीकृत करते हैं। विश्वासों के माध्यम से व्यक्ति दिव्य क्षेत्र और उसके साथ अपना संबंध समझ सकते हैं, जिसके अनुरूप वह अपना जीवन बिता सकते हैं।

विश्वासों पर आधारित धार्मिक अनुष्ठान वे नियम हैं जो दिव्य क्षेत्र से संबंधित व्यक्तिगत व्यवहार का मार्ग दर्शन करते हैं। धार्मिक अनुष्ठान सकारात्मक होते हैं (जिससे व्यक्ति को दिव्य क्षेत्र के नज़दीक लाया जाता है, जैसे कि हवन या यज्ञ) और नकारात्मक भी (इनमें दिव्य और लौकिक क्षेत्रों को एक दूसरे से दूर रखा जाता है)। उदाहरण के तौर पर शुद्धिकरण, उपवास, तपस्या आदि धार्मिक अनुष्ठान विश्वासों को और अधिक तीव्र या शक्तिशाली बनाते हैं। व्यक्तियों को एक दूसरे के करीब लाकर उनके सामाजिक स्वभावों को सशक्त किया जाता है। धार्मिक अनुष्ठान सामूहिक चेतना को अभिव्यक्त करते हैं। जैसा कि आपने पढ़ा है, सामूहिक चेतना का अर्थ है कि समान मूल्य, विश्वास और विचार जो सामाजिक एकात्मता को संभव बनाते हैं (देखिए गिडन्स 1974: 84-89)।

धर्म की व्याख्या विश्वासों और अनुष्ठानों की शब्दावली में करने से एक समस्या सामने आती है, क्योंकि इसके अंतर्गत जादू-टोना भी शामिल हो जाता है। क्या धर्म और जादू-टोना में कोई अंतर नहीं? नृशास्त्री रॉबर्टसन स्मिथ की तरह दर्खाइम धर्म और जादू-टोने में स्पष्ट भेद करता है। जादू-टोना निजी, स्वार्थी मामला है जो व्यक्तिगत स्तर पर किया जाता है। उदाहरण के लिये यदि जादू में विश्वास करने वाला अपने पड़ोसी से ज़्यादा सफल होना चाहे तो उसे जादू-टोना करवा कर पड़ोसी पर विपत्ति लाने का प्रयास करना होगा। ओझा (magician) को पैसा देकर तंत्र-मंत्र के द्वारा जादू में विश्वास करने वाले के लिए अपने पड़ोसी की फसल नष्ट करवाना संभव है, या उसकी गाय-भैंसे मरवाना संभव है। जादू-टोने में ओझा और ग्राहक के बीच संबंध निजी स्वार्थ से प्रेरित होता है। यह केवल व्यक्तिगत इच्छाओं के अनुरूप प्रकृति को प्रभावित करने का एक प्रयास है।

दूसरी ओर धर्म का सार्वजनिक और सामाजिक रूप है। भक्तों के बीच सामाजिक बंधन होते हैं, जो उन्हें समान जीवन बिताने वाले एक समूह के रूप में एकीकृत करते हैं। इन पक्षों पर ध्यान देते हुए दर्खाइम ने धर्म की व्याख्या करते हुए कहा कि पवित्र चीजों के संबंधित विश्वासों और अनुष्ठानों की एकीकृत व्यवस्था को धर्म कहते हैं और इन विश्वासों और अनुष्ठानों को मानने वाले अनुयायी एक नैतिक समूह में एकीकृत होते हैं।

आइए, अब हम देखें कि किस प्रकार आस्ट्रेलिया के आदिवासी समूह में प्रचलित टोटमवाद का

अध्ययन कर दर्खाइम ने धर्म के सरलतम रूप को समझने का प्रयास किया। लेकिन इससे पहले, बोध प्रश्न 1 के उत्तर दीजिए।

### बोध प्रश्न 1

- i) निम्नलिखित वाक्यों को रिक्त स्थानों की पूर्ति द्वारा पूरा कीजिए।
  - क) दर्खाइम ने धर्म के सरलतम रूप का अध्ययन किया क्योंकि  
.....
  - ख) दर्खाइम के अनुसार प्रत्येक धर्म में पाए जाने वाले समान तत्व  
.....
  - ग) लौकिक क्षेत्र ..... से संबद्ध है।
- ii) दर्खाइम धर्म और जादू-टोने के बीच किस प्रकार भेद करता है? तीन पंक्तियों में उत्तर दीजिए।  
.....  
.....  
.....

### 19.2.2 टोटमवाद का अध्ययन

जैसा कि पहले स्पष्ट किया गया है, दर्खाइम का यह मानना था कि जटिल धर्मों को समझने के लिये पहले सरलतम धर्मों को समझना आवश्यक है। उसके अनुसार टोटमवाद धर्म का सबसे सरल रूप है। मध्य आस्ट्रेलिया के आदिवासियों में यह धर्म प्रचलित है। इन समाजों के बारे में नृशास्त्रीय जानकारियाँ भरपूर मात्रा में उपलब्ध थीं। समाजशास्त्री और नृशास्त्री इनकी सामाजिक व्यवस्था को सरलतम मानते थे।

यह धर्म उन समाजों में पाया जाता है जिनमें सामाजिक व्यवस्था के आधार कुल (clan) हैं। कुल के सदस्य मानते हैं कि वे एक ही पूर्वज के वंशज हैं। यह पूर्वज या तो कोई प्राणी या वनस्पति हो सकता है अथवा कोई वस्तु। प्रतीक के रूप में इस पूर्वज को टोटम-वस्तु कहते हैं। इसी वस्तु से कुल अपना नाम और पहचान प्राप्त करता है। टोटम नाम मात्र नहीं, बल्कि एक चिन्ह है जो कि अक्सर उस कुल की विभिन्न वस्तुओं पर यहाँ तक कि लोगों के शरीर पर अंकित रहता है। इससे लौकिक वस्तुओं को विशेष महत्व मिलता है। वे पवित्र बन जाती हैं। टोटम वस्तु के संबंध में अनेक प्रतिबंध होते हैं। उसकी हत्या करना या उसे खाना मना है। उसे सम्मान का दर्जा दिया जाता है। कुल से संबंधित हर वस्तु टोटम से संबद्ध होती है और टोटम का अंग मानी जाती है। खून का रिश्ता न होते हुए भी कुल के सदस्यों को एक ही वंश का माना जाता है, क्योंकि उनका नाम, और चिन्ह एक है। परिणामस्वरूप कुल से बाहर विवाह करना एक महत्वपूर्ण नियम होता है। इस प्रकार इन सरल समाजों में धर्म और सामाजिक व्यवस्था पूरी तरह से अंतर्संबंधित हैं।

टोटम वस्तु और उससे संबंधित अन्य वस्तुओं को पवित्र क्यों माना जाता है? दर्खाइम के अनुसार टोटम-प्राणी या वनस्पति को वास्तव में पूजा नहीं जाता है बल्कि एक ऐसी अमूर्त अदृश्य शक्ति की पूजा होती है जो हर भौतिक वस्तु में छिपी रहती है। इस शक्ति को अनेक नाम दिये गये हैं, जैसे कि समोआ में “माना”, मेलनीशिया में “वाकान” और कुछ उत्तर अमरीकी जनजातियों में “ओरेंडा”। टोटम-वस्तु उस टोटम सिद्धांत का प्रतीक मात्र है जो कि स्वयं कुल ही है। कुल को अपना अस्तित्व प्रदान किया जाता है। टोटम वस्तु द्वारा उसे मूर्त रूप दिया जाता है। दर्खाइम के अनुसार “ईश्वर” की परिकल्पना समाज के दैवीकरण से उत्पन्न होती है। दूसरे शब्दों में

“ईश्वर” की परिकल्पना द्वारा समाज को नया रूप दिया जाता है। समाज को क्यों पूजा जाता है? दर्खाइम का कहना है कि समाज व्यक्ति की अपेक्षा हर क्षेत्र में अधिक शक्तिशाली है। उसका स्वतंत्र अस्तित्व है और उसकी शक्ति के प्रति भय की भावना पैदा होती है। अतः उसकी सत्ता सम्माननीय होती है। उदाहरण के लिये जब युद्ध में किसी युवा ने राष्ट्रीय ध्वज को ऊँचा रखने के लिये अपनी जान न्यौछावर की तो कहा जाएगा कि उसने ध्वज के लिये नहीं बल्कि अपने राष्ट्र के लिये अपनी जान न्यौछावर की। ध्वज राष्ट्र का चिन्ह मात्र है।

समाज व्यक्तिगत चेतना द्वारा ही अभिव्यक्त होता है। समाज हमसे त्याग और समर्पण के आग्रह द्वारा हमारे अंदर की पवित्रता की भावना को बढ़ावा देता है। धार्मिक समारोहों और त्यौहारों के दौरान यह बात स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। कुल के सारे सदस्य धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लेते हैं। सामूहिक उत्तेजना और उत्साह की भावना पैदा होती है जिनसे सामाजिक बंधन और अधिक मजबूत बनते हैं और सामाजिक एकात्मकता को बढ़ावा मिलता है।

संक्षेप में कुल के सदस्य अपने समान पूर्वज को पूजते हैं। यह टोटम वस्तु का रूप लेता है, जिससे कुल को अपना नाम और विशिष्ट पहचान मिलती है। लेकिन दर्खाइम का मानना है कि वास्तव में स्वयं कुल की ही पूजा टोटम वस्तु के माध्यम से होती है। धर्म का वास्तविक अर्थ है समाज को दिव्य रूप देकर उसकी पूजा करना, क्योंकि उसे व्यक्तियों से अधिक शक्तिशाली माना जाता है व्यक्ति पर समाज भौतिक और नैतिक प्रतिबंध लगाता है। समाज को पूजने से उसके सदस्यों में एकात्मकता और उत्साह की भावना को बढ़ावा मिलता है जिससे वे सामूहिक जीवन और उसकी सामूहिक अभिव्यक्ति में भाग ले सकते हैं।

आदिम अथवा सरलतम धर्मों पर दर्खाइम ने अनेक रोचक और महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किये हैं। उसने इन विचारों का जटिल विचार प्रणालियों को समझने में किस प्रकार उपयोग किया? जैसा कि आपको मालूम है, आधुनिक युग में विज्ञान का तीव्र गति से विकास हुआ है। क्या धर्म और विज्ञान एक दूसरे से बिल्कुल विपरीत हैं? अगले उप-भाग में आइए देखें कि इस संबंध में दर्खाइम का मत क्या है।

### सोचिए और करिए 1

भारत में प्रचलित किन्हीं दो धर्मों के पाँच विश्वासों एवं अनुष्ठानों की सूची बनाइए। अपनी सूची की तुलना अपने अध्ययन केंद्र के अन्य विद्यार्थियों की सूची से कीजिए।

### 19.2.3 धर्म और विज्ञान

दर्खाइम के अनुसार धार्मिक विचारधाराओं से ही वैज्ञानिक विचारधारा की उत्पत्ति हुई। धर्म और विज्ञान दोनों प्रकृति, मानव जाति और मानव समाज से संबंधित हैं। वस्तुओं का वर्गीकरण उनकी व्याख्या और उनके बीच पारस्परिक संबंधों को समझने का प्रयास धर्म और विज्ञान दोनों द्वारा किया जाता है।

विज्ञान वास्तव में धार्मिक विचारों का अधिक शुद्ध और विकसित रूप है। बल और शक्ति जैसी वैज्ञानिक परिकल्पनाएँ मूलतः धार्मिक परिकल्पनाएँ हैं। दर्खाइम का विश्वास है कि ऐसा समय आयेगा जब धार्मिक विचारों का स्थान विज्ञान ले लेगा। वह इस बात की ओर ध्यान आकृष्ट करता है कि समाज-विज्ञानों में धर्म का वैज्ञानिक अध्ययन किया जा रहा है।

धार्मिक विचार और वैज्ञानिक विचार दोनों सामूहिक प्रतिनिधान हैं, अतः उनके बीच संघर्ष होना असंभव है। धर्म और विज्ञान दोनों ही सार्वभौमिक सिद्धांत की खोज करने के दो प्रकार से प्रयास हैं। उनका उद्देश्य मानव-जाति को व्यक्तिगत स्वभाव की सीमाओं से बाहर लाकर एक ऐसी जीवन पद्धति को प्रोत्साहित करना है जो एक साथ व्यक्तिवादी और सामूहिक हो। संपूर्ण मानव

कहलाने के लिये व्यक्ति को समाज की आवश्यकता है। व्यक्ति और समाज को एक बनाने में धर्म और विज्ञान दोनों सहायक होते हैं।

हमने देखा कि किस प्रकार दर्खाइम धर्म का अध्ययन सामूहिक एकात्मकता के संदर्भ में करता है। सामूहिक एकात्मकता व्यक्तियों में एकता उत्पन्न कर तथा समाज की पूजा करवा कर और अधिक मजबूत और गहरी बन जाती है।

दर्खाइम के विचारों ने विशेष कर इंग्लैंड और फ्रांस के समाजशास्त्रियों और नृशास्त्रियों को प्रभावित किया। उसका भांजा मार्सेल मॉस उन महत्वपूर्ण नृशास्त्रियों में से था जिन्होंने दर्खाइम की पद्धति को अपनाया। उस के विषय में आपको कोष्ठक 19.1 में जानकारी दी गई है।

### कोष्ठक 19.1 मार्सेल मॉस

मार्सेल मॉस (1872-1950) एमिल दर्खाइम का भांजा था। लोरे (फ्रांस) के एक आत्मीय, धर्मनिष्ठ यहूदी परिवार में उसका जन्म हुआ। किन्तु मॉस ने यहूदी धर्म को नकार दिया। मॉस का अपने मामा के प्रति बहुत लगाव था और उसी के मार्गदर्शन में उसने बोर्दों में दर्शन-शास्त्र का अध्ययन प्रारंभ किया। दर्खाइम ने मार्सेल को पढाई में बहुत सहायता की। इनके इस आपसी लगाव से एक ऐसा बौद्धिक संबंध पैदा हुआ जिसके परिणामस्वरूप फार्म्स ऑफ प्रिमिटिव क्लासिफिकेशन (दर्खाइम और मॉस, 1903) और ऐसी अन्य कृतियां लिखी गई। "ऐनी सोशियोलोजीक" नामक दर्खाइम द्वारा स्थापित पत्रिका में मॉस संपादक के रूप में काम करने लगा। इसी दौरान अन्य मेधावी नौजवान विद्वानों से उसका परिचय हुआ, जिनके साथ वह काम करने लगा। ह्यूबर्ट, फॉसोने, बीशा के साथ उसने धर्म, जादू-टोना, यज्ञ, बलि, प्रार्थना, स्वयं की परिकल्पना इत्यादि विषयों पर महत्वपूर्ण लेख प्रकाशित किये।

सैक्रिफाइस: इट्स नेचर एंड फंक्शन (ह्यूबर्ट और मॉस 1899) में यज्ञ का अध्ययन किया गया, जिसे पवित्र और लौकिक क्षेत्रों के बीच संपर्क के रूप से देखा गया। जिस वस्तु की यज्ञ में आहुति दी जाती है, उसका विनाश हो जाता है।

द गिफ्ट (1925), मॉस की सबसे महत्वपूर्ण कृति मानी जाती है। प्राचीन समाजों में पायी जाने वाली भेंटों की लेन-देन की प्रणालियों पर मॉस ने ध्यान केन्द्रित किया। उसकी मुख्य परिकल्पनाएं इस प्रकार थीं: i) लेन-देन, जिसमें लेना, देना और भरपाई शामिल है। ये प्रत्येक समाज में पाये जाते हैं; ii) भेंटों का आदान-प्रदान सभी सामाजिक बंधनों को मजबूत करता है, चाहे वे सहकारी, प्रतिस्पर्धात्मक या संघर्षमय हों। मॉस ने सामाजिक व्यवस्था और लेन-देन के स्वरूप के बीच अंतर्संबंध दिखाने का प्रयास किया।

दोनों महा-युद्ध मॉस के जीवन में अनेक विपत्तियां लाये। पहले महा-युद्ध में उसने अनेक मित्र और सहकर्मी खो दिये। उसके प्रिय मामा दर्खाइम का पुत्र आंद्रे युद्ध में शहीद हो गया। यह सदमा दर्खाइम बर्दाश्त न कर सका और जल्द ही वह भी चल बसा। दूसरे महायुद्ध में फ्रांस में जर्मन सत्ता के दौरान मित्रों-सहकर्मियों को खोने का अनुभव उसे दोबारा झेलना पड़ा जिससे उसके मानसिक संतुलन पर बुरा असर हुआ। उसकी अनेक कृतियाँ अधूरी ही रह गईं। वह अपने बहुस्तरीय, व्यापक लेखों को इकट्ठा नहीं कर सका। 1950 में मॉस का देहान्त हो गया। आगे वाली पीढ़ी के लिये उसने एक महत्वपूर्ण बौद्धिक विरासत छोड़ दी। विशेष तौर पर ब्रिटिश और फ्रांसीसी समाजशास्त्री और नृशास्त्री उसके विचारों से अत्यंत प्रभावित हुए।

## बोध प्रश्न 2

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो पंक्तियों में लिखिए।

i) टोटम पर आधारित कुल के सदस्य दूसरे कुल में ही विवाह क्यों करते हैं?

.....  
.....

ii) दर्खाइम के अनुसार समाज को क्यों पूजा जाता है?

.....  
.....

iii) दर्खाइम का कहना है कि धर्म और विज्ञान के बीच संघर्ष असंभव है। क्यों?

.....  
.....

### 19.3 मैक्स वेबर का योगदान

मैक्स वेबर द्वारा प्रस्तुत धर्म के समाजशास्त्रीय अध्ययन का आधार है व्यक्तियों को कर्ता के रूप में देखना, और कर्ता द्वारा अपने परिवेश संबंधित व्यक्तिपरक अर्थ को समझना। वेबर अपना अध्ययन धार्मिक नीतियों या मान्यताओं पर केन्द्रित करता है, और अन्य सामाजिक उप-व्यवस्थाओं (जैसे कि अर्थव्यवस्थाओं और राजनीति) के साथ इनका पारस्परिक संबंध भी देखता है। इस प्रकार, वेबर की पद्धति में इतिहास का महत्व स्पष्ट होता है। इस पाठ्यक्रम के खंड 4, इकाई 15 में आपने वेबर द्वारा प्रस्तुत धर्म और आर्थिकी के बीच अंतर्संबंध का विस्तृत अध्ययन किया। जैसा कि पहले बताया जा चुका है, वेबर ने धर्म संबंधी विभिन्न कृतियाँ लिखीं, जिनमें *द प्रोटेस्टेंट एथिक एंड द स्पिरिट ऑफ कैपिटलिज्म* और प्राचीन भारतीय, चीनी और यहूदी धर्म के तुलनात्मक अध्ययन प्रमुख हैं, देखिए इस पुस्तक के अंत में दी गई संदर्भ ग्रंथ सूची। इस भाग में वेबर की धर्म संबंधित तुलनात्मक और ऐतिहासिक दृष्टि को स्पष्ट करने के लिये विश्व में विभिन्न धर्मों के बारे में उसके विचारों पर नज़र डाली जायेगी।

इस इकाई में हमने *प्रोटेस्टेंट एथिक एंड द स्पिरिट ऑफ कैपिटलिज्म* का विवेचन तो नहीं किया है, फिर भी यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण कृति है।

इस कृति के मुख्य विचारों के बारे में आपने पहले विस्तार से पढ़ा है। इस खंड की इकाई 21 में भी (जिसमें पूँजीवाद के संबंध में वेबर के विचार दिये जायेंगे) इस पर पुनः चर्चा होगी। फिर भी आपको यह सलाह दी जाती है कि आगे बढ़ने से पहले खंड 4 की इकाई 16 में प्रोटेस्टेंट नीतियों पर दी गई जानकारी पर एक सरसरी नज़र डालें। आइए, अब वेबर द्वारा प्रस्तुत विश्व के विभिन्न धर्मों से संबंधित कुछ मुद्दों का संक्षेप में अध्ययन करें। सबसे पहले भारतीय धर्म पर उसके विचारों के बारे में पढ़ें।

#### 19.3.1 भारतीय धर्म

1916 में लिखी गई *द रिलिजन ऑफ इंडिया* नामक कृति में वेबर हिन्दू धर्म, बौद्ध धर्म और जैन धर्म का उल्लेख करता है। उसके अनुसार हिन्दू धर्म को जाति व्यवस्था के संबंध में देखना चाहिए। जाति व्यवस्था शुरू में काम-काज में विशेषज्ञता पर आधारित थी। लेकिन कालान्तर में यह वंशानुगत हो गई, ब्राह्मण जाति सबसे शक्तिशाली बनी। इस जाति के सदस्यों को ही शास्त्र पढ़ने का अधिकार था, अतः पारंपरिक विचारों का प्रचार इन्हीं के हाथों में केन्द्रित रहा। निम्न

जातियाँ, खास कर के शूद्र अत्यंत शोषित थीं, चूँकि उन्हें “अपवित्र” माना जाता था। इसलिये ये धार्मिक ग्रंथों के अध्ययन से वंचित थीं। परिणामस्वरूप वे मोक्ष के लायक भी समझी नहीं जाती थीं। मोक्ष या मुक्ति ही हिन्दुओं का परम उद्देश्य माना जाता है। वेबर के अनुसार हिन्दू धर्म का मूल मंत्र “कर्म” की अवधारणा है। मनुष्य की परिस्थिति पिछले जन्म में किये गये अच्छे या बुरे कर्मों का फल है। यदि व्यक्ति इस जन्म में धर्मानुसार कर्म करे, तब अगले जन्म में इसका उचित फल मिलेगा। ब्राह्मण का धर्म है शास्त्रों का अध्ययन करना, क्षत्रिय का धर्म है उसकी प्रजा और भूमि की रक्षा करना, वैश्य का धर्म व्यापार है और शूद्र से अन्य जातियों की सेवा अपेक्षित है। पिछले कर्मों से ही इस जन्म में व्यक्ति की जाति निर्धारित होती है, और अगले जन्म में ऊँची जाति में जन्म लेने के लिये धर्म का पालन अति आवश्यक है। लेकिन सबसे परम लक्ष्य मोक्ष ही है, जिससे जन्म, मृत्यु और पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति मिलती है। मोक्ष ही जीवन की अनिश्चितता और दुःख का अंतिम समाधान है।

भौतिक उन्नति वांछनीय है, किन्तु यह क्षणिक है। आध्यात्मिक उन्नति में स्थिरता है। आध्यात्मिक पूँजी का मूल्य कभी कम नहीं होता। इसी के द्वारा जन्म, मृत्यु और पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति मिल सकती है। आध्यात्मिक लक्ष्यों की प्राप्ति से ही मोक्ष मिलता है। वेबर यह दिखाने का प्रयास करता है कि इसी आध्यात्मिक संयम वाली प्रकृति ने पूँजीवाद को नहीं पनपने दिया। यह उल्लेखनीय है कि मध्यकालीन भारतीय नगर उत्पादन के विख्यात केन्द्र माने जाते थे। तकनीकी काफी विकसित थी। भौतिक परिस्थितियाँ उपयुक्त थीं। परन्तु हिन्दू मान्यताओं के अनुरूप भौतिक क्षेत्र को विशेष महत्व नहीं दिया गया।

वेबर के अनुसार बौद्ध और जैन धर्म शान्तिप्रिय धर्म थे। इन्होंने हिन्दू धर्म की रूढ़ियों का विरोध किया। ये धर्म ध्यान (contemplation) पर जोर देते थे। इनके अनुयायी सन्यासी या भिक्षुक थे, जिन्होंने लौकिक संसार को त्याग दिया था। सामान्य लोग भिक्षुक को दान देकर पुण्य प्राप्त कर सकते थे, परन्तु निर्वाण या मुक्ति पाने के लिये सांसारिकता को त्यागकर सन्यास लेना अनिवार्य था।

जाति व्यवस्था तथा हिन्दू धर्म, बौद्ध धर्म और जैन धर्म के विश्वास एक दूसरे के पूरक थे, और पूँजीवाद के पनपने में बाधक सिद्ध हुए, हालाँकि पूँजीवाद के फूलने-फलने के लिये मध्यकालीन भारतीय नगर केन्द्र थे। भारत एक परंपरागत देश बना रहा जिसकी सामाजिक व्यवस्था अत्यंत मजबूत थी (देखिये कॉलिन्स 1986: 111-118)।

### 19.3.2 चीनी धर्म

1916 में वेबर ने *द रिलिजन ऑफ चाइना* (चीनी धर्म) भी लिखी। चीन के पारंपरिक कन्फ्यूशियस धर्म का उल्लेख करते हुये उसने कहा कि यह धर्म भी प्रोटेस्टेंट धर्म की तरह “इहलौकिक आत्मसंयम”(this worldly asceticism) पर जोर देता है। किन्तु प्रोटेस्टेंट नीतियाँ विश्व के नियंत्रण और परिवर्तन पर जोर देती हैं जबकि दूसरी ओर कान्फ्यूशियस नीतियाँ संतुलन की परिकल्पना को अपनाती हैं। विश्व और ब्रह्मांड की व्यवस्था उपयुक्त अनुष्ठानों और कर्मकांडों द्वारा बनायी जाती है। बोलने-चालने के उचित ढंग को अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जाता था। सत्ताधारी वर्ग (चीन का मंडारिन या पंडित वर्ग) बोलचाल के तरीकों और नीति नियमों का रक्षक था। सामाजिक व्यवस्था और संतुलन को बनाये रखने को इतना अधिक महत्व देने के परिणामस्वरूप विश्व को बदलने की प्रवृत्ति (जो कि पूँजीवाद की मूल प्रवृत्ति है) को प्रोत्साहन नहीं दिया गया। इस प्रकार कन्फ्यूशियस धर्म की प्रमुख नीतियाँ, संयम और संतुलन आदि पूँजीवाद की प्रवृत्ति के विपरीत थीं।



### 19.3.3 प्राचीन यहूदी धर्म

एंग्लिश जुडाइज्म नामक वेबर की महत्वपूर्ण कृति 1917 और 1919 के दौरान लिखी गई। पाश्चात्य समाज के परिवर्तनों को समझने के लिये यह कृति अत्यंत महत्वपूर्ण है।

यहूदी धर्म से ही इस्लाम और ईसाई धर्म का उदगम हुआ। ये सभी धर्म विश्व के परिवर्तन पर जोर देते हैं। आपने खंड 4, इकाई 16 में पढ़ा है कि किस प्रकार यहूदी धर्म पृथ्वी पर ही स्वर्ग निर्माण करने का विचार सामने लाता है। इस विचार के परिणाम अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इससे दुनिया को नियंत्रित कर उसे बदलने को अनुयायी प्रेरित होते हैं। परिवेश पर नियंत्रण पाना ही आधुनिक पाश्चात्य सभ्यता का प्रमुख लक्षण है। यहूदी पैगम्बर नैतिक पैगम्बर थे, जिन्होंने अनुयायियों को अपने आदेशों और संदेशों द्वारा एक जुट करने का प्रयास किया। वे फिलिस्तीन के असंतुष्ट, शोषित किसानों को यह सीख देते थे कि दैविक प्रकोप देश को नष्ट कर देगा। वे कहते थे कि ईश्वर शहरों में बसे ऐश्वर्य-आराम की जिन्दगी बिताने वाले सत्ताधारी वर्ग से क्रुद्ध था। जब तक इस वर्ग का पतन नहीं होता और ईश्वर के मार्ग पर चलने वाला समाज स्थापित नहीं होता तब तक फिलिस्तीन में खुशहाली नहीं हो सकती। इस्लाम और ईसाई धर्म में भी नैतिक पैगम्बर होते हैं, जो एक विशिष्ट प्रकार की आचार-पद्धति का प्रचार करते हैं।

1920 में वेबर का देहान्त हो गया। ईसाई धर्म और इस्लाम पर वेबर के लेख अधूरे ही रह गये। वह विश्व के धर्म संबंधी अपने सारे शोधकार्य को मिलाकर पूँजीवाद के उदय और विकास से जुड़े इस प्रश्न का समाधान खोजना चाहता था, परन्तु इस स्वप्न को वह साकार नहीं कर सका।

आगे पढ़ने से पहले सोचिए और करिए 2 का पूरा करें।

#### सोचिए और करिए 2

उपरोक्त जानकारी को पढ़ने के बाद, धर्म पर वेबर के विचारों को ध्यान में रखते हुए पैगम्बर मुहम्मद और ईसा मसीह के बारे में जानकारी इकट्ठा करें। इसके आधार पर दो पृष्ठ का लेख लिखें। आपके लेख में जो महत्वपूर्ण बातें होनी चाहिए वे इस प्रकार हैं :

(क) उनकी जीवन वृत्तान्त (ख) उनके उपदेश (ग) उनके उपदेशों का प्रभाव।

इस भाग को पढ़कर शायद आपको यह लग रहा हो कि यह खंड 4, इकाई 16 की पुनरावृत्ति है। किन्तु इसका उद्देश्य वेबर के धर्म संबंधी अध्ययन के मुख्य विषय यानि धार्मिक विचारों और मनुष्य के क्रियाकलाप के बीच संबंध को उजागर करना है। याद रहे, वेबर ने कर्ता की सार्थकता के संदर्भ में मानवीय कार्यों की व्याख्या की है। प्राचीन भारत में एक अछूत जाति व्यवस्था से विद्रोह क्यों नहीं कर सकता था इस प्रश्न के उत्तर में वेबर ने धार्मिक विश्वास पर आधारित उस व्यवस्था को दर्शाया, जिसमें व्यक्ति द्वारा विश्व को बदलने की रोक थी। इसी प्रकार पूर्वनियति और ईश्वरीय आह्वान की धारणाओं ने प्रोटेस्टेंट लोगों को मेहनत करने और पूँजी इकट्ठा करने के लिये प्रेरित किया। धर्म के संबंध में वेबर के विचारों से अनेक अमरीकी और भारतीय समाजशास्त्री प्रभावित हुए हैं।

वेबर की कृतियाँ पैगम्बरों की भूमिका को दर्शाती हैं। वेबर यह भी दिखाता है कि किस प्रकार धार्मिक विश्वास समाज के विशिष्ट वर्गों से संबंधित है। कन्फ्यूशियस धर्म सत्ताधारी मंडारिन वर्ग से जुड़ा था, हिन्दू धर्म जाति व्यवस्था को प्रोत्साहित करने वाले ब्रह्मणों से, और यहूदी धर्म शोषित, असंतुष्ट ग्रामीण लोगों से।

अगले भाग में, दर्खाइम, और वेबर के विचारों की तुलना की जायेगी। लेकिन इससे पहले, बोध प्रश्न 3 के उत्तर दीजिए।

- i) निम्नलिखित वाक्यों को रिक्त स्थानों की पूर्ति द्वारा पूरा करें।
- क) वेबर के अनुसार, हिन्दू धर्म का प्रमुख विश्वास ..... है।
- ख) हिन्दू धर्म का परम उद्देश्य ..... की प्राप्ति है।
- ग) ..... की कन्फ्यूशियस कल्पना के कारण ही चीन में पूँजीवाद पनप नहीं सका।
- घ) विश्व का ..... और ..... ही आधुनिक पाश्चात्य सभ्यता का प्रमुख लक्षण है।
- ड.) वेबर ने मानवीय क्रिया की व्याख्या के संदर्भ में की है।

## 19.4 दर्खाइम और वेबर: तुलना

प्रत्येक चिंतक की विचारपद्धति उसे एक दृष्टिकोण प्रदान करती है जिससे उसे व्यावहारिक मुद्दों का अध्ययन करने में मदद मिलती है। खंड की पहली इकाई में आपने पढ़ा है कि किस प्रकार दर्खाइम सामाजिक तथ्यों को बाहरी वस्तुओं की तरह देखता है। समाज का स्वतंत्र अस्तित्व (sui generis) है, समाज व्यक्ति के महले भी था, और व्यक्ति के बाद भी रहेगा। व्यक्ति को समाज का अंग बनाने के लिये समाज उस पर कुछ प्रतिबंध लगाता है।

दूसरी ओर वेबर व्यक्ति या कर्ता पर ध्यान केन्द्रित करता है। कर्ता की आचार पद्धति उसके मूल्यों और विश्वासों पर आधारित होती है। वेबर के अनुसार बोध अथवा जर्मन शब्द फ़र्स्टेहन (verstehen) द्वारा इनका अध्ययन करना समाजशास्त्री का उद्देश्य होना चाहिए। दर्खाइम तथा वेबर की इन विपरीत विचारधाराओं का प्रयास धर्म के अध्ययन द्वारा स्पष्ट होता है।

आइए, सबसे पहले दर्खाइम और वेबर की विश्लेषण की इकाइयाँ देखें। उन्होंने बहुत ही भिन्न धर्म-व्यवस्थाओं को चुना जिनकी सामाजिक पृष्ठभूमि भी बहुत भिन्न है।

### 19.4.1 विश्लेषण की इकाइयाँ

जैसे कि आपने पढ़ा है, दर्खाइम ने धर्म के सरलतम रूप का अध्ययन किया। उसने जनजातीय समाजों का अध्ययन किया है जिनमें सामूहिक जीवन अत्यधिक महत्वपूर्ण है। समान मान्यताएँ और भावनाएँ ऐसे समाजों को एकात्म करती हैं। इन समाजों का कोई लिखित इतिहास नहीं होता है। धर्म और कुल (clan) व्यवस्था का गहरा संबंध होता है। इस प्रकार दर्खाइम धर्म की एक सामूहिक तथ्य के रूप में देखता है जिससे सामाजिक बंधन और अधिक मज़बूत बनते हैं।

दूसरी ओर वेबर के विश्लेषण की इकाई में विश्व के विकसित धर्म के अध्ययन हैं। उनके ऐतिहासिक आधार और आर्थिक गतिविधियों में उनके योगदान पर उसका अपना ध्यान आकृष्ट होता है। वह विश्व के इन महान धर्मों को समकालीन सामाजिक परिस्थितियों की प्रतिक्रियाओं के रूप में देखता है। उदाहरण के लिये बौद्ध धर्म और जैन धर्म ने जाति व्यवस्था का विरोध किया गया। यहूदी धर्म शोषित फिलिस्तीनी ग्रामवासियों का धर्म था। प्रोटेस्टेंट धर्म कैथोलिक चर्च की विलासिताओं के प्रति विरोध का प्रतीक था। संक्षेप में दर्खाइम सरलतम धर्मों के अध्ययन द्वारा धर्म को सामाजिक व्यवस्था बनाये रखने में सहायक मानता है। दूसरी ओर वेबर देखता है कि किस प्रकार आचार-विचार के नये तरीके विकसित करने में धर्म की रचनात्मक भूमिका होती है।

### 19.4.2 धर्म की भूमिका

यह कहा जा सकता है कि दर्खाइम धर्म को सामूहिक चेतना की अभिव्यक्ति मानता है। टोटम

की पूजा का वास्तविक अर्थ है, कुल (clan) की पूजा। इस प्रकार कुल द्वारा सम्मानित विचार और विश्वास व्यक्तिगत चेतना के अंग बन जाते हैं। पवित्र और लौकिक क्षेत्रों के बीच मध्यस्थता अनुष्ठानों द्वारा की जाती है। कुछ महत्वपूर्ण अनुष्ठानों में कुल के सारे सदस्य भाग लेते हैं, जिससे सामूहिक उत्साह उत्पन्न हो जाता है। व्यक्ति सामाजिक बंधनों में बाँधे जाते हैं, समाज की महानता और शक्ति का उन्हें अहसास दिलाया जाता है।

दूसरी ओर, वेबर धर्म को आर्थिक, राजनैतिक और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखना चाहता है। समाज की अन्य व्यवस्थाओं से उसका पारस्परिक संबंध किस प्रकार का है? समाज और धर्म एक दूसरे को किस प्रकार प्रभावित करते हैं?

प्रत्येक समाज की अलग-अलग सांस्कृतिक विशेषताओं पर वेबर ध्यान देता है। धर्म को वह उस व्यापक ऐतिहासिक प्रक्रिया का अंग मानता है, जिसके अंतर्गत पूँजीवाद, औद्योगीकरण और तर्कसंगति का विकास शामिल है। इस खंड की इकाई 21 में इस मुद्दे पर और अधिक विस्तार से चर्चा की जायेगी।

आपने पढ़ा कि किस प्रकार इन चिंतकों के विश्लेषण की इकाइयाँ भिन्न थीं। धर्म की भूमिका के संबंध में भी उनके विचार भिन्न-भिन्न थे। परिणामस्वरूप दर्खाइम और वेबर द्वारा इस्तेमाल की गई परिकल्पनाओं और अवधारणाओं में भी अंतर है। वेबर बिना झिझक के उन परिकल्पनाओं का प्रयोग करता है जिन्हें दर्खाइम ने हमेशा दूर रखा। आइए इस बात पर आगे और अधिक विस्तार से चर्चा करें।

### सोचिए और करिए 3

विश्व के मानचित्र पर i) भारत ii) चीन iii) फ़िलिस्तीन iv) आस्ट्रेलिया को अंकित कीजिए। इन देशों में व्याप्त धर्मों की सूची बनाइए।

### 19.4.3 देवता, भूत-प्रेत और पैगम्बर

दर्खाइम इस बात से सहमत नहीं है कि देवताओं, भूत-प्रेतों जैसी रहस्यमय बातों से धर्म संबंधित है। वह मानता है कि स्वयं समाज को ही पूजा जाता है, जिसे प्रतीकात्मक वस्तुओं द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। वेबर देवताओं और भूत-प्रेतों के बारे में लिखने से नहीं हिचकता। याद रखें, वह ऐसे धर्मों का अध्ययन करता है जिनका विकास जनजातीय धर्मों की तुलना में बहुत देर से हुआ। इन धर्मों में व्यक्तिगत गुणों का समावेश है, और उनमें एक प्रकार की अमूर्तता है। अमूर्तता का संबंध प्रतीकात्मकता से होता है।

आइए, इस संदर्भ में टोटमवाद का उदाहरण लें। दर्खाइम के अनुसार, टोटम कुल का प्रतीक है। वेबर ऐसे टोटम का उदाहरण देता है जिसकी पूजा भी होती है, साथ-साथ उसकी आहुति देकर उसे खाया भी जाता है। ऐसी दावत में जनजाति के देवताओं और भूत-प्रेतों को भी बुलाया जाता है। टोटम प्राणी को खाने से कुल के सदस्यों में एकात्मता की भावना उत्पन्न होती है। वे मानते हैं कि प्राणी की आत्मा उनमें प्रवेश करती है। इस प्रकार के टोटम को एक चिन्ह या प्रतीक मात्र नहीं मानते हैं बल्कि उसका सार-तत्व आपस में बाँटकर (जो कि न सिर्फ हाड़-माँस अपितु आत्मा भी है) कुल के सारे सदस्य एकात्म हो जाते हैं।

दर्खाइम की तुलना में वेबर पैगम्बरों की भूमिका को अधिक महत्वपूर्ण मानता है। यहूदी धर्म, इस्लाम और ईसाई धर्म के इतिहास में अनेक नैतिक पैगम्बरों का उल्लेख है जिन्हें लोग ईश्वर का प्रतिनिधि मानते थे, और यह मानते थे कि ईश्वर के साथ पैगम्बरों का सीधा सम्पर्क है। इस संदर्भ में इब्राहीम, मूसा, मुहम्मद, ईसा जैसे करिश्माई नेतृत्व वाले व्यक्तियों के नाम गिने जा सकते हैं, जिन्होंने लोगों को अत्यधिक आकृष्ट किया।

संक्षेप में, दर्खाइम इस बात को नकारता है कि धर्म मूलतः भूत-प्रेतों और देवताओं से संबंधित है। वह मानता है कि धर्म के द्वारा स्वयं समाज को ही पूजा जाता है ताकि सामाजिक बंधन और अधिक मज़बूत बनें और व्यक्ति समाज की शक्ति और अमरत्व को अनुभव कर सकें। वेबर धर्म के प्रतीकात्मक पक्ष पर ध्यान देता है। भूत-प्रेत और देवताओं जैसी अमूर्त कल्पनाएं इन्हीं प्रतीकात्मक विचारों के उदाहरण होते हैं। धार्मिक विश्वासों का स्वरूप बदलने और पुनर्निर्मित करने में करिश्माई व नैतिक पैगम्बरों के योगदान के संबंध में भी वह चर्चा करता है।

आइए, अब धर्म और विज्ञान के अंतर्संबंध के बारे में दर्खाइम और वेबर के विचारों पर एक नज़र डालें।

#### 19.4.4 धर्म और विज्ञान

जैसा कि आपने पढ़ा है, दर्खाइम धर्म और विज्ञान दोनों को सामूहिक प्रतिनिधान मानता है। वैज्ञानिक वर्गीकरण मूलतः धर्म से लिया जाता है। इस प्रकार, धर्म और विज्ञान के बीच कोई संघर्ष या भेद नहीं हो सकता है। वेबर इससे सहमत नहीं है। विश्व के धर्मों के तुलनात्मक अध्ययन द्वारा उसने स्थापित किया कि किस प्रकार भारतीय और चीनी नेताओं ने पूँजीवाद को पनपने का अवसर नहीं दिया। प्रोटेस्टेंट धर्म ने ही तर्कसंगत पूँजीवाद के पनपने के लिये उपयुक्त विचारधारा प्रदान की। वेबर के अनुसार विज्ञान तर्कसंगति का प्रतीक है जो कि धर्म की रहस्यवादी और परंपरागत मान्यताओं को चुनौती देता है। विज्ञान मनुष्य को आनुभाविक जानकारी देता है और उसे अपने परिवेश को समझने में और उस पर नियंत्रण करने में सहायता देता है। इस प्रकार, वेबर मानता है कि धर्म और विज्ञान एक दूसरे से विपरीत हैं।

इन चिंतकों के विचारों की तुलना करना आसान नहीं है जिन समाजों की वे बात कर रहे हैं, वे इतने भिन्न हैं कि उनके निष्कर्ष में अंतर होना स्वाभाविक ही है। फिर भी कुछ बातें उल्लेखनीय हैं। दर्खाइम धर्म को वह माध्यम मानता है, जिसके द्वारा व्यक्ति समाज की भौतिक और नैतिक शक्ति को स्वीकार करता है। धर्म वस्तुओं और परिकल्पनाओं के वर्गीकरण का एक प्रयास है। विज्ञान का उद्गम इसी से होता है।

वेबर धर्म का अध्ययन अनुयाईयों द्वारा दिये गये अर्थों और उनके क्रियाकलापों और अन्य सामाजिक गतिविधियों पर उसके प्रभाव के संदर्भ में करता है, विज्ञान धर्म को चुनौती देता है, और भूत-प्रेतों को भगाकर उनकी जगह प्रयोगसिद्ध जानकारी स्थापित करता है।

धर्म के अध्ययन हेतु विचार दर्शन की दृष्टि से दर्खाइम एवं वेबर में तुलना करते हुए तालिका 19.1 में दिखाया गया है कि इन दोनों विचारकों ने किस प्रकार धर्म को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखा।

एमिल दर्खाइम का विचार दर्शन	मैक्स वेबर के विचार दर्शन
i) प्राचीन धर्मों का अध्ययन	विश्व के विकसित धर्मों का अध्ययन
ii) धर्म सामूहिक चेतना की अभिव्यक्ति है	धर्म, राजनीति, अर्थव्यवस्था, इतिहास आदि अंतर्संबंधित हैं
iii) “देवता”, “भूत-प्रेत”, “पैगम्बर” जैसी परिकल्पनाओं की उपेक्षा	इन्हीं परिकल्पनाओं का भरपूर इस्तेमाल
iv) धर्म और विज्ञान एक दूसरे के पूरक है। अतः इनके बीच संघर्ष नहीं है।	धर्म और विज्ञान विपरीत हैं।

तालिका 19.1: धर्म के अध्ययन हेतु विचार दर्शन

## बोध प्रश्न 4

निम्नलिखित वाक्यों को पूरा करें।

- क) दर्खाइम धर्म के ..... रूप का अध्ययन करता है, जबकि वेबर ..... का अध्ययन करता है।
- ख) ईसा, मूसा, ईब्राहीम और मोहम्मद ..... थे।
- ग) भूत-प्रेत और देवता की कल्पनाएं ..... का परिणाम है।

## 19.5 सारांश

इस इकाई में हमने देखा कि एमिल दर्खाइम और मैक्स वेबर ने किस प्रकार धर्म को सामाजिक तथ्य मानकर उसका अध्ययन किया। सबसे पहले हमने दर्खाइम के विचारों पर चर्चा की। सरलतम धर्म का अध्ययन करने में उसका उद्देश्य, धर्म की व्याख्या, टोटमवाद का अध्ययन, धर्म और विज्ञान के बीच अंतर्संबंध के पक्षों पर हमने नज़र डाली।

इसके पश्चात् हमने वेबर के योगदान की चर्चा की। “प्रोटेस्टेंट एथिक” संबंधित उसके विचार न दोहराते हुए भी बार-बार उसका उल्लेख किया गया। हमने देखा कि किस प्रकार वेबर ने भारतीय और चीनी धर्मों और प्राचीन यहूदी धर्म का अध्ययन किया, और पूँजीवाद के उदय के संदर्भ में उसने किस प्रकार धर्म और अन्य सामाजिक उप-व्यवस्थाओं के बीच अंतर्संबंध को स्थापित किया।

अंत में हमने इन चिंतकों के विचारों में निम्नलिखित पक्षों में अंतर देखा।

- 1) विश्लेषण की इकाइयाँ
- 2) धर्म की भूमिका
- 3) परिकल्पनाओं और अवधारणाओं में अंतर
- 4) धर्म और विज्ञान का अंतर्संबंध।

## 19.6 शब्दावली

दैवीकरण	दिव्य स्तर प्रदान करना
ईश्वरीय आह्वान	काम काज को न सिर्फ आर्थिक आवश्यकता बल्कि धार्मिक कर्तव्य मानना
सामूहिक उत्तेजना	सामूहिक उत्साह की भावना। इससे व्यक्तियों के आपसी बंधन और अधिक मजबूत बन जाते हैं, और जिससे वे समाज में अपनी सदस्यता पर गर्व करते हैं।
सामूहिक प्रतिनिधान	इससे दर्खाइम का तात्पर्य है समाज के वे सभी विचार, कल्पनाएं और परिकल्पनाएं जो समान होती हैं। उदाहरण के लिये सौंदर्य, सत्य, सही, गलत आदि।
नैतिक पैगम्बर	ये लोगों को प्रभावशाली उपदेश देते हैं, जो अक्सर धार्मिक होते हैं। वे पुरानी सामाजिक व्यवस्था का पतन चाहते हैं जिसे वे बुरा मानते हैं। वे अनुयायियों को एक नयी दिशा देते हैं और

ईश्वर से संपर्क सिद्ध करने के प्रयास करते हैं। यहूदी धर्म, ईसाई धर्म, इस्लाम पैगम्बरों के धर्म हैं।

आनुभाषिक

अनुभव, प्रेक्षण पर आधारित

जादू-टोना

प्रकृति को व्यक्तिगत स्वार्थ हेतु प्रभावित करने का प्रयास। लगभग सभी सरल समाजों में और कई विकसित समाजों में भी यह पाया जाता है।

पूर्व नियति

एक कैल्विनिवादी (प्रोटेस्टैंट) विश्वास। इसके अनुसार यह माना जाता है कि व्यक्ति को मुक्ति के लिये ईश्वर द्वारा चुना जाता है। चुनाव ईश्वर की इच्छा पर आधारित है, और व्यक्ति इस संबंध में कुछ नहीं कर सकता है।

तर्क संगति

पाश्चात्य सभ्यता का मुख्य लक्षण। इसके द्वारा जीवन को नियंत्रित, नियमबद्ध बनाया जाता है। व्यक्ति अपने परिवेश का गुलाम न रहकर उसका मालिक बन जाता है।

पवित्र और लौकिक क्षेत्र

दर्खाइम के अनुसार विश्व को इन दो क्षेत्रों में बांटा जाता है। पवित्र क्षेत्र, शुद्ध और उच्च स्तर का होता है। जबकि लौकिक क्षेत्र साधारण या आम वस्तुओं से संबद्ध है।

टोटमवाद

प्राचीन धर्म जिसमें किसी पशु, पेड़ पौधे आदि को समूह का पूर्वज माना जाता है, जिसकी पूजा होती है।

## 19.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

आरों, रेमों, 1970. *मेन करैट्स इन सोशियोलॉजिकल थॉट* खंड 1 और 2, पेंगुइन बुक्स: लंदन (वेबर और दर्खाइम से संबंधित भाग देखें)

कालिन्स, रैंडल, 1986. मैक्स वेबर: *ए स्केलेटन की सेज पब्लिकेशन* इंक: बेवर्ली हिल्स

जोन्स, रॉबर्ट एलन, 1986. एमिल दर्खाइम: *एन इंट्रोडक्शन टू फोर मेज़र वर्क्स* सेज पब्लिकेशन इंक: बेवर्ली हिल्स

## 19.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

- i) क) इससे जटिल धर्म को समझना आसान हो जाता है।  
ख) विश्वास और अनुष्ठान  
ग) आम, साधारण वस्तुओं
- ii) दर्खाइम के अनुसार जादू टोना निजी और स्वार्थी मामला है। इसमें जादूगर और ग्राहक के बीच ही संबंध होता है। दूसरी ओर धर्म सार्वजनिक और सामाजिक है। सामाजिक बंधनों द्वारा अनुयायी एक दूसरे के साथ जुड़ जाते हैं। इस प्रकार, सामाजिक एकात्मता को बढ़ावा मिलता है।

बोध प्रश्न 2

- i) टोटम के सदस्य अपने आप को एक समान पूर्वज के वंशज मानते हैं। इसलिए खून का रिश्ता न होते हुए भी वे एक दूसरे से शादी नहीं कर सकते हैं।

- ii) समाज व्यक्ति से पहले था और उसके जाने के बाद भी रहेगा। समाज व्यक्ति से ज्यादा शक्तिशाली और अमर है, अतः उसे पूजा जाता है।
- iii) दर्खाइम धर्म और विज्ञान दोनों को सामूहिक प्रतिनिधान मानता है। उसके अनुसार, विज्ञान का उद्गम धर्म से ही हुआ। व्यक्ति, प्रकृति और समाज को समझने के इन दोनों प्रयासों (विज्ञान और धर्म द्वारा) के बीच संघर्ष असंभव है।

**बोध प्रश्न 3**

- i) क) कर्म की धारणा  
ख) मोक्ष  
ग) संतुलन  
घ) नियंत्रण, परिवर्तन  
ड) कर्ता की सार्थकर्ता

**बोध प्रश्न 4**

- i) क) सरलतम, विश्व के धर्मों  
ख) नैतिक पैगम्बर  
ग) प्रतीकात्मकता